11 त्याग का सम्मान

प्राचीन काल में भद्रावती नगरी में राजा उग्रसेन राज करते थे। राज्य में सभी प्रकार शांति और सुख था। राजा प्रजा का पुत्र के समान पालन करते थे।

एक दिन राजा मंत्रियों सहित दरबार में बैठे हुए विचार-विमर्श कर रहे थे तभी किसी दूसरे राज्य का एक नागरिक चंद्रकांत वहाँ आया। उसने राजा को प्रणाम करके निवेदन किया–"महाराज, मैं सूर्य नगर का नागरिक हूँ और एक सैनिक हूँ। महाराज यदि अपनी सेवा में नियुक्त करें तो मैं सदा आभारी रहूँगा। मैं अपने कर्तव्य का पालन निष्ठापूर्वक करूँगा।"

राजा ने उससे पूछा–"तुम्हारा वेतन क्या होगा?" चंद्रकांत ने उत्तर दिया–"महाराज, प्रतिदिन सौ मुद्राएँ।" राजा के इनकार करने पर चंद्रकांत वहाँ से चला गया। तभी मंत्रियों ने निवेदन किया–"महाराज, उसको दो-चार दिन के लिए नियुक्त कर उसका कार्य देखें।"

मंत्रियों की सम्मति मानकर राजा ने उसे बुलाया और पहले एक सप्ताह के लिए उसको नियुक्त कर दिया। राजा ने उसे अपना अंगरक्षक बनाया। रात के समय चंद्रकांत हाथ में नंगी तलवार लिए राजा के शयन-कक्ष के बाहर पहरा देता था।

एक रात राजा गहरी नींद में सोया हुआ था कि किसी स्त्री के रोने की आवाज़ सुनकर उसकी आँख खुल गई। उसने फ़ौरन चंद्रकांत को बुलाकर आज्ञा दी–"देखो, यह कौन रो रहा है?"

जिस ओर से रोने की आवाज़ आ रही थी, चंद्रकांत उसी ओर चल पड़ा। राजा के मन में उसी समय विचार आया कि इस अंधकारपूर्ण रात्रि में अकेले चंद्रकांत को भेजकर मैंने उचित नहीं किया। फ़ौरन ही राजा भी तलवार लेकर उसके पीछे चल दिया।

महल से कुछ ही दूरी पर मंगला देवी का मंदिर था। रोने की आवाज़ वहीं से आ रही थी। वहा पहुँचकर चंद्रकांत ने देखा कि एक स्त्री अपने बाल बिखेरे ज़ोर से विलाप कर रही है। चंद्रकांत के पीछे चलता हुआ राजा भी वहाँ जा पहुँचा और छिपकर देखने लगा। चंद्रकांत ने जब स्त्री से रोने का कारण पूछा तो उसने कहा–"मैं इस राज्य की राज-लक्ष्मी हूँ। बहुत समय तक यहाँ रही, किंतु अब यहाँ से जा रही हूँ। मेरे जाने के बाद राजा मर जाएगा और यह राज्य नष्ट हो जाएगा।"

यह सुनकर चंद्रकांत को दुख हुआ। उसने राज्य की रक्षा का उपाय पूछा तो देवी ने बताया–"एक स्वस्थ युवक की बलि देकर राजा के प्राणों की रक्षा की जा सकती है।"

सब कुछ सुनकर चंद्रकांत अपने घर गया। वहाँ अपने परिवार के सब सदस्यों को बुलाकर उसने सारी घटना कह सुनाई। तभी चंद्रकांत का युवा पुत्र उठ खड़ा हुआ और राजा के जीवन की रक्षा के लिए अपनी बलि देने को तैयार हो गया। चंद्रकांत अपने पुत्र

और पत्नी को लेकर मंदिर लौट आया। वहाँ पुत्र ने तलवार से अपना सिर काटकर देवी को अर्पित कर दिया। पुत्र-बलि को देखकर माता का हृदय विकल हो गया। पुत्र-वियोग को सहन न कर सकने के कारण माँ ने भी प्राण त्याग दिए। यह दृश्य देखकर चंद्रकांत शोकग्रस्त होकर सोचने लगा कि पत्नी और पुत्र के अभाव में अब मेरा जीवन भी निरर्थक है। ऐसा विचार कर उसने भी तलवार से अपना सिर काटने की तैयारी की। उसी समय देवी ने उसका हाथ पकड़ लिया। उसकी स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर देवी ने उसके पुत्र तथा पत्नी को पुनर्जीवित कर दिया।

यह सब देखकर राजा महल को चुपचाप लौट आया। चंद्रकांत भी वहाँ पहुँचकर पहरा देने लगा। अगले दिन राजा ने सब दरबारियों को बुलाकर सारी घटना सुनाई और प्रसन्न होकर चंद्रकांत को सेनापति के पद पर नियुक्त कर दिया।